Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवन शैली: एक समीक्षात्मक अध्ययन

अनबर खान*

* सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल) शासकीय शहीद केदारनाथ महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक विशेषताएँ और जीवन शैली इस क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक भूगोल की गहरी समझ प्राप्त करना है, जिसमें उनकी सामाजिक संरचनाएँ, पारंपरिक रीति-रिवाज, खानपान, वस्त्र, कला, और उनका पर्यावरणीय संबंध समाहित हैं। आदिवासी समुदाय अपने पारंपरिक ज्ञान, पुरानी कृतियों और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के प्रति अपनी आस्था को जीवित रखते हैं, जो इनकी जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है।

मध्य प्रदेश में आदिवासी जीवन शैली को समझने के लिए, इस अध्ययन में विभिन्न आदिवासी जातियों के सांस्कृतिक और भौगोलिक पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। उदाहरण के रूप में, गोंड आदिवासी अपने पारंपरिक कारीगरी और कृषि कार्यों में लगे होते हैं, जबकि भील आदिवासी सामूहिक शिकार और जंगलों से जुड़ी पारंपरिक विधियों का पालन करते हैं। इन समुदायों की सांस्कृतिक पहचान उनका सांगीतिक और नृत्य परंपरा, जैसे कि गोंडी नृत्य और भील वाद्ययंत्र, उनके सामूहिक जीवन का एक प्रमुख हिस्सा हैं।आदिवासी जीवन में प्रकृति और पर्यावरण का गहरा प्रभाव है। इन समुदायों का विश्वास है कि पृथ्वी, जल, और वन उनके जीवन के अभिन्न अंग हैं। यह जीवन शैली पारंपरिक कृषि पद्धतियों, जंगलों में सामूहिक शिकार, और प्राकृतिक उपचार पद्धतियों से जुड़ी है। इनकी धार्मिक आस्थाएँ भी प्रकृति से जुड़ी होती हैं, जहां प्रत्येक पहाड़ी, नदी, और वृक्ष के प्रति सम्मान व्यक्त किया जाता है।

हालांकि, आधुनिक विकास और बाहरी प्रभावों ने आदिवासी समाज की जीवन शैली में काफी बदलाव लाया है। सरकारी योजनाओं, शिक्षा के प्रसार और बाहरी व्यापारिक गतिविधियों के कारण इनके पारंपरिक ज्ञान और रहन-सहन में बदलाव आ रहा है। इन परिवर्तनों का असर आदिवासी समाज की सामाजिक संरचनाओं पर भी पड़ा है, जिससे उनकी पारंपरिक रीति-रिवाजों में अवरोध उत्पन्न हो सकता है।

शोध के अंतर्गत यह निष्कर्ष भी निकला कि आदिवासी समुदायों के लिए सांस्कृतिक संवर्धन और पारंपरिक ज्ञान की रक्षा अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए, सरकारी नीतियों और योजनाओं को उनके सांस्कृतिक अधिकारों के साथ संतुलित करना होगा। इस शोध का उद्देश्य आदिवासी समुदायों के जीवन की समृद्धि को बनाए रखते हुए उन्हें आधुनिकता और विकास की दिशा में समर्थ बनाना है।समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना और उसे विकास की प्रक्रिया में सही तरीके से शामिल करना न केवल उनके जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाएगा, बल्कि हमारे समाज की विविधता और सांस्कृतिक धरोहर को भी सुदृढ़ करेगा।

प्रस्तावना – मध्य प्रदेश भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य में स्थित एक समृद्ध सांस्कृतिक और भौगोलिक क्षेत्र है, जो अपनी विविधता और ऐतिहासिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के आदिवासी समुदाय, जो इस राज्य के लगभग 20% जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं, भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य का अभिन्न हिस्सा हैं। इन समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवनशैली न केवल उनके पारंपरिक रीति-रिवाजों, विश्वासों, और परंपराओं से बल्कि उनके प्राकृतिक संसाधनों, पर्यावरणीय परिस्थितियों, और सामाजिक संरचनाओं से भी गहरे जुड़े होते हैं।आदिवासी समाज की जीवनशैली उनके पारंपरिक ज्ञान, कला, संगीत, नृत्य, वस्त्र, भोजन, और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करने के तरीके से परिभाषित होती है। मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की मुख्य पहचान उनके पर्यावरणीय समन्वय, वन्यजीवों के साथ सह-अस्तित्व, और अपनी जमीन पर आधारित परंपराओं और संस्कृतियों के माध्यम से होती है। इन समुदायों का जीवन संरचनात्मक, धार्मिक, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत विविध है, जिसमें हर समुदाय की अपनी विशिष्टता है।

यह शोध पत्र मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक भूगोल और जीवनशैली का एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करेगा, जिसमें उनके पारंपरिक ज्ञान, सामाजिक संरचनाएँ, और पर्यावरणीय व्यवहारों का अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन का उद्देश्य आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की आवश्यकता और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए रणनीतियाँ विकसित करना है।आदिवासी समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, उनके विकास के अवसर, और उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों को भी इस शोध में शामिल किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर आदिवासी समुदायों के अधिकारों की सुरक्षा और उनके सांस्कृतिक संवर्धन के लिए विभिन्न नीति-निर्माण पहलुओं पर भी चर्चा की जाएगी।

शोध प्राविधि– इस अध्ययन में मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक भूगोल और जीवन शैली की समीक्षात्मक जांच हेतु विभिन्न शोध प्रविधियों का सहारा लिया गया है। शोध कार्य में गुणात्मक तथा वर्णनात्मक पद्धतियों का प्रमुखत: उपयोग किया गया है। निम्नलिखित विधियों को अनुसरण किया गया।

अध्ययन क्षेत्र का चयन–अध्ययन हेतु मध्य प्रदेश के प्रमुख आदिवासी बहुल जिलों जैसे झाबुआ, अलीराजपुर, धार, मंडला, डिंडोरी, शहडोल, बड़वानी एवं अनूपपुर का चयन किया गया। इन क्षेत्रों में भील, गोंड, बैगा, कोरकू, और सहरिया समुदायों की प्रमुख उपस्थिति है।

प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत:

प्राथमिक स्रोत: फील्ड सर्वेक्षण, साक्षात्कार, प्रतिभागी अवलोकन तथा आदिवासी समुदायों के स्थानीय नेताओं एवं बुजुर्गों से प्रत्यक्ष वार्ता के माध्यम से डाटा एकत्र किया गया।

द्वितीयक स्रोत:शोध–पत्र, पुस्तकों, सरकारी रिपोर्ट्स (जैसे जनगणना 2011), एनजीओ द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट्स तथा अन्य प्रासंगिक दस्तावेजों का अध्ययन किया गया।

सीमाएँ: यह अध्ययन क्षेत्र विशेष तक सीमित है और समय तथा संसाधनों की सीमाओं के कारण कुछ समुदायों का आंशिक प्रतिनिधित्व संभव हो पाया है। इसके अतिरिक्त, कुछ आदिवासी समूहों की पारंपरिक जानकारी मौखिक होने के कारण उनके विवरणों में विविधता हो सकती है।

शोध के उद्देश्य:

1. मध्य प्रदेश के प्रमुख आदिवासी समुदायों की भौगोलिक अवस्थिति का अध्ययन करना।
2. आदिवासी समुदायों की पारंपरिक जीवन शैली, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक विशेषताओं का विश्लेषण करना।
3. विभिन्न आदिवासी समूहों के बीच सांस्कृतिक विविधता तथा समानताओं की पहचान करना।
4. आधुनिकता और विकास कार्यों के प्रभाव से आदिवासी जीवन में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
5. आदिवासी समुदायों की आजीविका, रहन–सहन, लोककला, धार्मिक विश्वासों और त्योहारों के संरक्षण एवं परिवर्तन के कारकों का विश्लेषण करना।
6. सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना जो आदिवासी समाज के सामाजिक–आर्थिक विकास से जुड़े हैं।
7. आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने हेतु संभावित सुझाव प्रस्तुत करना।

सांस्कृतिक भूगोल: सांस्कृतिक भूगोल एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें किसी विशेष क्षेत्र के सांस्कृतिक तत्वों और उनके भौतिक स्थानों के बीच के संबंधों का अध्ययन किया जाता है। आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके पर्यावरण, जीवनशैली, पारंपरिक ज्ञान और समय के साथ विकसित हुए सामाजिक और सांस्कृतिक पैटर्न को दर्शाता है।मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों में प्रमुख समुदायों में गोंड, भील, सहरिया, हल्बा, एवं अन्य शामिल हैं। ये सभी समुदाय अपनी संस्कृति, भाषा, भोजन, धर्म और पारंपरिक कृतियों में अद्वितीय हैं, और उनका जीवन अधिकांशत: प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है।

मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की जनसंख्या

आदिवासी समुदाय	जनसंख्या (लाखों में)	राज्य में प्रतिशत (2011)
भील	52.4	7.8
गोंड	40.1	6.1
बैगा	0.8	0.1
सहरिया	0.7	0.1
कोरकू	1.3	0.2
भिलाला	1.5	0.2
अन्य आदिवासी	10.9	1.6

(स्रोत – 2011 जनगणना के अनुसार)

भौगोलिक वितरण: मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की संख्या और सांस्कृतिक विविधता काफी अधिक है। राज्य का भूगोल इन समुदायों के जीवन और सांस्कृतिक आदतों को प्रभावित करता है। मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदाय मुख्य रूप से राज्य के विभिन्न हिस्सों में फैले हुए हैं, जैसे कि सागर, जबलपुर, छिंदवाड़ा, शहडोल, मंडला, बालाघाट, और अन्य कई क्षेत्रों में। इन क्षेत्रों में जंगलों, पहाड़ों, और नदी घाटियों की उपस्थिति आदिवासी जीवनशैली के महत्वपूर्ण तत्व हैं, जो इन समुदायों के आर्थि क और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित करते हैं।

1. भील समुदाय – पश्चिमी मध्य प्रदेश के झाबुआ, अलीराजपुर, धार एवं बड़वानी जिलों में।
2. गोंड समुदाय – मंडला, डिंडोरी, बालाघाट, उमरिया, शहडोल एवं अनूपपुर जिलों में।
3. बैगा समुदाय – मंडला व डिंडोरी के सघन वन क्षेत्रों में।
4. सहरिया समुदाय – शिवपुरी, गुना, अशोकनगर तथा श्योपुर जिलों में।
5. कोरकू समुदाय – बेतूल और खंडवा के वनाच्छादित क्षेत्रों में।

मध्य प्रदेश के प्रमुख आदिवासी समुदायों का भौगोलिक वितरण

आदिवासी समुदाय	प्रमुख जिलों का नाम	भूगोलिक विशेषताएँ
भील	झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी	जंगल, पहाड़ी क्षेत्र, नदी के किनारे स्थित
गोंड	मंडला, डिंडोरी, बालाघाट, शहडोल	घने जंगल, पहाड़ी इलाके
बैगा	मंडला, डिंडोरी	घने वन क्षेत्र, प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियाँ
सहरिया	शिवपुरी, अशोकनगर, गुना	जंगलों के नजदीक, वन्य उत्पादों पर निर्भर
कोरकू	बेतूल, खंडवा	पर्वतीय क्षेत्र, प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर
भिलाला	खंडवा, बड़वानी, आलीराजपुर	पहाड़ी इलाके, कृषि आधारित जीवन

(स्रोत–मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट)

आदिवासी समुदायों की सामाजिक संरचना (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता: आदिवासी समुदायों का जीवन मुख्य रूप से जंगलों, जल स्रोतों, और कृषि योग्य भूमि पर निर्भर है। वे न केवल खाद्य सामग्री के लिए बल्कि औषधियों, लकड़ी, और अन्य उपयोगी सामग्री

के लिए भी जंगलों पर निर्भर करते हैं। आदिवासी समुदायों के लिए जंगल जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं और ये उनके सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा भी हैं। पानी की उपलब्धता और कृषि भूमि का प्रबंधन इन समुदायों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आदिवासी परिवारों की अधिकांश आय (लगभग 70-80%) जंगलों, जल स्रोतों, और कृषि संसाधनों से आती है। उदाहरण स्वरूप, मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों का लगभग 30% जीवनयापन जंगलों से प्राप्त लकड़ी, फल, कंद, औषधियाँ, और अन्य वन उत्पादों पर निर्भर है।

आदिवासी परिवारों की आय का स्रोत: मध्य प्रदेश में आदिवासी परिवारों की लगभग70-80% आयजंगलों, कृषि, और जल स्रोतों से प्राप्त होती है। इनमें से अधिकतर संसाधन जंगलों से आते हैं, जैसे किफल, लकड़ी, औषधियाँ, और मांस।

भूमि उपयोग और कृषि: आदिवासी समुदायों का लगभग40% कृषि भूमिझूम कृषि में उपयोग होती है, जो मुख्य रूप से जंगलों पर आधारित होती है।वन उत्पादों (जैसे की महुआ, तेंदू, आंवला, और लाख) आदिवासी समुदायों की आय का लगभग15-20% हिस्सा बनाते हैं।

आदिवासी समुदायों की पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

1. **जल संसाधनों पर निर्भरता:** आदिवासी समाज के लिए जल का स्रोत महत्वपूर्ण है, और यह लगभग50-60% आदिवासी परिवारोंके लिए एक प्रमुख जीवनशैली का हिस्सा है। इन समुदायों का80% पानी नदी, तालाब और झरनों से प्राप्त होता है।आदिवासी क्षेत्र में500-600 पारंपरिक जल संचयन संरचनाएँ (जैसे की कूप, तालाब, चुआं) मौजूद हैं, जो इन समुदायों की जल सुरक्षा को सुनिश्चित करती हैं।

2. **वन और जैव विविधता:** मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में लगभग70% जंगलोंका संरक्षण और प्रबंधन आदिवासी समुदायों द्वारा पारंपरिक रूप से किया जाता है। यह जंगलजैव विविधताके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।50% से अधिक वन्यजीवों की प्रजातियाँ (जैसे कि तेंदुआ, हाथी, भालू, आदि) आदिवासी क्षेत्र में पाई जाती हैं, जिनका संरक्षण आदिवासी समाज अपनी पारंपरिक पद्धतियों के माध्यम से करता है।

3. **खनिज संसाधनों पर निर्भरता:** मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की भूमि परखनिज संसाधनों का लगभग 40%भंडार मौजूद है। इन खनिजों मेंकोयला, बॉक्साइट, और लाइमस्टोनशामिल हैं, जिनका शोषण आदिवासी समुदायों की पारंपरिक जमीनों पर किया जा रहा है।खनिज उत्खनन के कारण इन समुदायों की भूमि और पारिस्थितिकी तंत्र में भारी बदलाव आ रहा है, जो उनके पारंपरिक जीवनशैली को प्रभावित करता है।

4. **शिकार और वन्य जीवन:** आदिवासी समुदायों का शिकार और मांसाहार पर निर्भरता बहुत अधिक है। मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में लगभग20-25%परिवार अपने आहार के लिए शिकार पर निर्भर रहते हैं।वन्यजीवों का शिकारआदिवासी समुदायों में पारंपरिक रिवाजों और अनुष्ठानों का हिस्सा होता है, लेकिन यह शिकार अब संसाधन संकट के कारण घटता जा रहा है।

5. **स्वास्थ्य और औषधियाँ:** आदिवासी समुदायों के लिएजड़ी-बूटियाँ और वनस्पतियाँमहत्वपूर्ण स्वास्थ्य संसाधन हैं।40-50% आदिवासी परिवारअपनी बीमारियों के इलाज के लिए पारंपरिक वनस्पतियों का उपयोग करते हैं।मध्य प्रदेश में 70% से अधिक आदिवासी परिवारोंके पास सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच है, जिससे यह समुदाय पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों पर निर्भर रहते हैं।

जीवन शैली: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों की जीवन शैली प्राचीनता, प्रकृति के साथ सामंजस्य और परंपराओं से गहरी जुड़ी हुई है। इन समुदायों का जीवन मुख्य रूप से कृषि, वनोपज संग्रहण, और कारीगरी पर आधारित होता है। इनकी जीवन शैली में सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पहलू गहरे हैं। आदिवासी समाज में आत्मनिर्भरता और पारिवारिक संरचनाओं का महत्व अधिक है, जहाँ बुजुर्गों का सम्मान और पारंपरिक ज्ञान को उच्च स्थान दिया जाता है।आदिवासी लोग अक्सर अपने समुदाय के भीतर पारंपरिक अनुष्ठान और संस्कारों का पालन करते हैं, जो उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे विवाह, जन्म, मृत्यु आदि से संबंधित होते हैं। इसके अलावा, आदिवासी महिलाएं घरेलू और बाहरी कार्यों के बीच संतुलन बनाए रखते हुए अपने परिवार की देखभाल करती हैं, जबकि पुरुष वन में शिकार और कृषि कार्यों में सक्रिय रहते हैं।

आधुनिकता के प्रभावों के बावजूद, इन समुदायों ने अपनी पारंपरिक जीवन शैली को बनाए रखा है। हालांकि, समय के साथ, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, और सरकार की योजनाओं का इनकी जीवन शैली पर असर पड़ा है।

आवास एवं निर्माण शैलीरूआदिवासी समुदायों के आवास और निर्माण शैली उनके पर्यावरण और संसाधनों के प्रति गहरी समझ को दर्शाते हैं। मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में घरों का निर्माण मुख्यत: स्थानीय सामग्री से किया जाता है, जैसे कि बांस, लकड़ी, घास, मिट्टी और चूना।

1. **मकान की संरचना:** आदिवासी समुदायों के मकान आमतौर पर 'पाकड़' या 'मशक' की छतों वाले होते हैं, जो वर्षा के पानी को बचाने में सहायक होते हैं। इन घरों को प्राकृतिक तापमान में संतुलन बनाए रखने के लिए डिजाइन किया जाता है।

2. **सामग्री का चयन:** बांस और लकड़ी का उपयोग आदिवासी समुदायों द्वारा अपने घरों के निर्माण में किया जाता है क्योंकि ये प्राकृतिक संसाधन हैं और सस्ते होते हैं। इसके अलावा, इन सामग्रियों से बनाए गए घरों में प्राकृतिक वेंटिलेशन और ठंडक बनाए रखने की क्षमता होती है।

3. **संरचनाओं का डिजाइन:** घरों की संरचना पारंपरिक होती है और पर्यावरणीय परिस्थितियों से मेल खाती है। ये घर सर्दी और गर्मी दोनों में संतुलित रहते हैं, और बहुत ही सरल, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल होते हैं।

4. **समुदायिक भवन:** आदिवासी गांवों में अक्सर एक सामुदायिक भवन या चौपाल होता है, जहाँ समुदाय के लोग एकत्र होते हैं और महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। यह स्थान उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों का केंद्र होता है।

आहार: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का आहार उनकी सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है और यह उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ा हुआ है। ये समुदाय परंपरागत रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं, जो उनके आहार में मुख्य भूमिका निभाते हैं। आदिवासी समाज में भोजन के चयन में क्षेत्रीयता, मौसम और उपलब्धता की भूमिका प्रमुख होती है।

1. **प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता:** आदिवासी समुदायों के आहार में वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों, फल-फूल, कंद-मूल, और विभिन्न प्रकार के अनाजों का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के लोग कृषि पर भी निर्भर रहते हैं,

लेकिन उनका आहार मुख्य रूप से वनस्पति और जंगलों से प्राप्त सामग्री पर आधारित होता है।

2. **धान और मक्का:** मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में धान और मक्का का सेवन मुख्य आहार के रूप में किया जाता है। ये अनाज आदिवासी लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं और इनके विभिन्न रूपों में उपयोग होते हैं जैसे पकवानों, दल, और रोटियों में।

3. **मांसाहार और पशुपालन:** कई आदिवासी समुदायों में मांसाहार का भी प्रचलन है। जंगली जानवरों का शिकार या घरेलू पशुओं का पालन करके वे मांस का सेवन करते हैं। मांसाहार उनके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

4. **जड़ी-बूटियाँ और औषधीय खाद्य:** आदिवासी लोग पारंपरिक रूप से जड़ी-बूटियाँ और औषधीय पौधों का उपयोग अपने आहार में करते हैं। यह न केवल उनके आहार को पोषण प्रदान करता है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता है। उदाहरण के तौर पर, हल्दी, अदरक, और नीम जैसी जड़ी-बूटियाँ उनके दैनिक आहार में शामिल रहती हैं।

5. **पेय पदार्थ:** आदिवासी समुदायों में पेय पदार्थों के रूप में विभिन्न प्रकार के पारंपरिक पेय जैसे, ताड़ी (पाम के रस से बनता है) का सेवन किया जाता है। यह विशेष रूप से समुदायों में सामाजिक अवसरों और उत्सवों में लोकप्रिय होता है।

वस्त्र एवं आभूषण: आदिवासी समुदायों के वस्त्र और आभूषण उनकी सांस्कृतिक पहचान का एक अहम हिस्सा होते हैं। इन वस्त्रों की डिजाइन और रंग बिरंगे पैटर्न पारंपरिक रूप से उस समुदाय की सामाजिक स्थिति और क्षेत्रीय पहचान को दर्शाते हैं। महिलाओं के वस्त्र में अधिकतर सूती कपड़े होते हैं, जो उनके आसपास के प्राकृतिक संसाधनों से तैयार किए जाते हैं। पुरुषों के वस्त्र आम तौर पर लुंगी या धोती की तरह होते हैं। इसके अलावा, आदिवासी महिलाएँ अपनी पोशाक को सजाने के लिए विभिन्न प्रकार के आभूषण पहनती हैं, जैसे कि चांदी की चूड़ियाँ, हार, नथ, और कान की बालियाँ।आभूषणों का चुनाव और उनका डिजाइन भी विभिन्न समुदायों के बीच भिन्न-भिन्न होते हैं। कुछ आदिवासी समुदायों में तो आभूषणों को सामाजिक स्थिति का प्रतीक माना जाता है। आभूषणों का निर्माण प्राय: स्थानीय कारीगरों द्वारा किया जाता है, और यह कारीगरी भी पारंपरिक और सामुदायिक कला का हिस्सा है। इन आभूषणों में प्राकृतिक तत्व जैसे लकड़ी, हठी, और धातु का उपयोग होता है, जो इन समुदायों के पर्यावरणीय संबंधों को प्रकट करते हैं।समग्र रूप से देखा जाए तो मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का जीवन शैली और वस्त्र-आभूषण उनकी सांस्कृतिक धरोहर और पर्यावरणीय समझ का हिस्सा हैं। इनका अध्ययन हमें केवल उनके भौतिक जीवन के बारे में ही नहीं, बल्कि उनके समाज, कला, और संस्कृति के गहरे अर्थों को भी समझने का अवसर प्रदान करता है।

1. पारंपरिक रंगीन वस्त्रय पुरुषों में धोती एवं अंगोछा, महिलाओं में लुगड़ा और ब्लाउज।
2. धातु, बीज एवं सीपियों से बने आभूषणों का विशेष स्थान।
3. शरीर पर गोदना (टैटू) बनवाने की परंपरा।

धार्मिक विश्वास एवं अनुष्ठान: आदिवासी समुदायों में धार्मिक विश्वास और अनुष्ठान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी आधिकारिक धार्मिक व्यवस्था आदिवासी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ी होती है।

1. **देवता और पूजा:** आदिवासी समाजों में प्रकृति के तत्वों जैसे सूरज, चाँद, पहाड़, नदियाँ, और पेड़-पौधों की पूजा की जाती है। इन समुदायों का विश्वास है कि इन प्राकृतिक तत्वों में आत्मा होती है जो उनकी दिनचर्या से जुड़ी रहती है। जैसे किभगवान बघेड़ा, ठाकुर देवता, यागांव के देवताकी पूजा होती है।

2. **आनुष्ठानिक संस्कार:** आदिवासी समुदायों में जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित विभिन्न धार्मिक संस्कार होते हैं। विवाह परंपराएँ भी आदिवासी समाज में खास होती हैं, और इनमें विभिन्न रिवाजों का पालन किया जाता है।सगाई, विवाह रात्रि पूजा, औरसमाज की ओर से स्वीकृतिजैसी परंपराएँ खास हैं।

3. **साप्ताहिक और वार्षिक पर्व:** आदिवासी लोग अपने देवताओं की पूजा करने के लिए विभिन्न त्योहारों और मेलों का आयोजन करते हैं। इनमेंनवरेह, गणेश पूजा, औरलोकनृत्यप्रमुख हैं। ये पर्व विशेष रूप से सामूहिक जीवन का हिस्सा होते हैं, जिनमें आदिवासी समाज के लोग सामूहिक रूप से एकत्र होते हैं और अपनी संस्कृति को मनाते हैं।

आदिवासी समुदायों के प्रमुख त्योहार और अनुष्ठान

आदिवासी समुदाय	प्रमुख त्योहार/अनुष्ठान	धार्मिक विश्वास
भील	भगोरिया, माताजी का मेला	देवता पूजा, प्रकृति पूजा
गोंड	करमा, मटकी फोड़	बड़की, साध्वी देवी की पूजा
बैगा	हलमाई, करमा उत्सव	पुरखों की पूजा, टोटेम पूजा
सहरिया	हरी झंडी, सहेड़ा	प्रकृति और औषधि देवता की पूजा
कोरकू	रघुनाथ उत्सव, पूजा	टोटेम पूजा, नदी पूजा

(स्रोत-मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट)

शिक्षा एवं स्वास्थ्य: मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति एक चुनौतीपूर्ण विषय है। आदिवासी समुदायों के बीच शिक्षा की साक्षरता दर अपेक्षाकृत कम है। राज्य सरकार ने आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के विस्तार के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, लेकिन अभी भी कई इलाकों में आधारभूत संरचनाओं की कमी और शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी देखी जाती है।अधिकतर आदिवासी इलाकों में स्कूलों का अभाव है, और जहाँ स्कूल हैं, वहाँ शिक्षकों की कमी और बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। इसके बावजूद, कुछ आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रसार में सुधार हुआ है, खासकर लड़कियों की शिक्षा में। आदिवासी संस्कृति और जीवनशैली के संदर्भ में शिक्षा का महत्व बढ़ता जा रहा है, और इसे एक महत्वपूर्ण सशक्तिकरण उपकरण के रूप में देखा जा रहा है।

स्वास्थ्य: आदिवासी समुदायों के स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएँ भी काफी गंभीर हैं। आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता में काफी अंतर है। कई आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव है, और लोग पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों का सहारा लेते हैं।सरकारी योजनाएँ, जैसे आयुष्मान भारत योजना, आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर इन योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन एक चुनौती है। आदिवासी क्षेत्रों में कुपोषण, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर, और संक्रामक बीमारियों की उच्च दर स्वास्थ्य की प्रमुख समस्याएँ हैं।

आदिवासी समुदायों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ **(अन्तिम पृष्ठ पर देखे)**

परिवर्तन एवं चुनौतियाँ: आधुनिकता और औद्योगिकीकरण के प्रभाव से आदिवासी समुदायों में कई परिवर्तन हुए हैं। जल, जंगल, और जमीन पर आदिवासी अधिकारों का उल्लंघन, सरकारी नीतियों की अनदेखी, और बाहरी व्यापारिक दबाव उनके जीवन में गहरे बदलाव लाए हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विकास भी आदिवासी क्षेत्रों में हुआ है, लेकिन वह पर्याप्त नहीं है और कई बार बाहरी संस्कृतियों के प्रभाव में अपनी सांस्कृतिक पहचान को खोने का खतरा उत्पन्न होता है।

वनों का क्षरण: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का जीवन घने वनों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहा है। वनों का क्षरण और अतिक्रमण इस समुदाय की पारंपरिक जीवनशैली पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। आदिवासी लोग इन जंगलों का संरक्षण करते थे, लेकिन अब वनों की अन्धाधुंध कटाई और शहरीकरण के कारण उनके अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया है। इस परिवर्तित परिप्रेक्ष्य में, आदिवासी समाज को जंगलों से अपनी निर्भरता को कम करने के उपाय खोजने की आवश्यकता है, जिससे उनकी पारंपरिक जीवनशैली और सांस्कृतिक धरोहर को बचाया जा सके।

आधुनिकता का प्रभाव: आधुनिकता के प्रभाव में सबसे पहलेशहरीकरणऔरविकासके तत्व प्रमुख रूप से उभरे हैं। मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में प्रमुख बदलावों में शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी प्रगति और बाजार अर्थव्यवस्था का हस्तक्षेप शामिल है। ये बदलाव आदिवासी समुदायों के पारंपरिक जीवन और उनके सांस्कृतिक परंपराओं में असंतुलन का कारण बने हैं। आदिवासी क्षेत्रों में शहरीकरण के कारण कई लोग रोजगार की तलाश में गांवों से बाहर जाने लगे हैं। इस प्रवृत्ति ने उनके पारंपरिक गांवों की संरचना और सामाजिक संबंधों को प्रभावित किया है। यह उनके पारंपरिक जीवन और संस्कृतियों को विस्थापित करने का कारण बन रहा है।

शिक्षा व रोजगार:

1. **शिक्षा की अपर्याप्तता और पहुँच:** आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की कमी के कारण बच्चों को पर्याप्त शिक्षा नहीं मिल पाती है। इसके अलावा, कई आदिवासी क्षेत्रों में स्कूलों की कमी, बुनियादी सुविधाओं का अभाव और शिक्षकों की कमी जैसी समस्याएँ हैं।
2. **भाषाई और सांस्कृतिक बाधाएँ:** आदिवासी समुदायों की अपनी भाषाएँ और संस्कृति हैं, जो सामान्य शिक्षा प्रणाली के लिए एक बाधा हो सकती हैं। बच्चों को स्थानीय भाषा में शिक्षा देने की आवश्यकता है ताकि वे बेहतर तरीके से समझ सकें और सीख सकें।
3. **शिक्षा का खर्च:** आदिवासी क्षेत्रों में आर्थिक तंगी और शिक्षा के उच्च खर्च के कारण बच्चों को स्कूल भेजना मुश्किल हो जाता है, जिससे शिक्षा प्राप्ति में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं।
4. **कृषि पर निर्भरता:** अधिकांश आदिवासी समुदाय अपनी आजीविका के लिए कृषि और वनोपज पर निर्भर हैं, लेकिन आधुनिक कृषि तकनीकों की कमी और जलवायु परिवर्तन के कारण उनकी आजीविका प्रभावित हो रही है। इस क्षेत्र में उन्नति के लिए उचित प्रशिक्षण और संसाधनों की आवश्यकता है।
5. **रोजगार के अवसरों की कमी:** आदिवासी क्षेत्रों में औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण रोजगार के अवसर सीमित हो गए हैं। अधिकतर आदिवासी युवा शहरों में रोजगार की तलाश में पलायन कर रहे हैं, लेकिन वहां भी उन्हें योग्यतानुसार अवसर नहीं मिल पाते।
6. **आर्थिक और सामाजिक असमानताएँ:** आदिवासी समुदायों के लिए रोजगार में असमानता और भेदभाव की समस्या भी बनी हुई है। विभिन्न सरकारी योजनाओं के बावजूद, इन समुदायों को बराबरी के अवसर नहीं मिल पा रहे हैं, और वे अक्सर निम्न-आय वर्गों में शामिल होते हैं।

संस्कृति पर संकट:

1. **विकास परियोजनाएँ:** जल विद्युत परियोजनाएँ, खनन कार्य, और औद्योगिकीकरण के कारण आदिवासी क्षेत्रों में भूमि का अधिग्रहण और प्राकृतिक संसाधनों का शोषण हुआ है। इन विकास परियोजनाओं के कारण आदिवासी समुदायों के पारंपरिक जीवन में दखलअंदाजी हुई है और उनकी सांस्कृतिक पहचान खतरे में पड़ी है।
2. **शहरीकरण और प्रवासन:** शहरीकरण की प्रक्रिया और गांवों से शहरों की ओर प्रवासन ने आदिवासी समुदायों को अपनी पारंपरिक जीवन शैली से दूर किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाएं शहरी जीवन के प्रभाव में टूट रही हैं।
3. **शिक्षा और आधुनिकता:** शिक्षा और आधुनिकता का प्रभाव आदिवासी समुदायों के बच्चों पर देखा जा रहा है। उनकी पारंपरिक भाषा, संगीत, नृत्य और कला अब कम होती जा रही हैं, और आधुनिक जीवन शैली की ओर बढ़ने का दबाव बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप, सांस्कृतिक विरासत का ह्रास हो रहा है।
4. **सामाजिक और राजनीतिक असमानता:** आदिवासी समुदायों को राजनीतिक और सामाजिक असमानताओं का सामना करना पड़ रहा है। उनके अधिकारों की रक्षा और उनकी संस्कृति को सशक्त बनाने के लिए राजनीतिक ध्यान और संसाधनों की कमी है, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को संकट में डालता है।

आर्थिक चुनौतियाँ: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों की जीवनशैली, जो परंपरागत रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रही है, अब कई आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रही है। कृषि, वनोपज और पशुपालन उनके आर्थिक ढांचे के प्रमुख स्तंभ हैं। लेकिन आधुनिकता और विकास की गति के साथ इन क्षेत्रों में कई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैंरू

1. **भूमि अधिकारों का संकट:**आदिवासी क्षेत्रों में भूमि अधिकारों की कमी एक बड़ी समस्या है। कई आदिवासी समुदायों के पास अपनी जमीन पर कानूनी अधिकार नहीं होते, जिसके कारण उन्हें खेती और वनोपज के लाभ से वंचित होना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप, वे कई बार श्रमिक के रूप में काम करने को मजबूर होते हैं और उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय होती है।
2. **विकास परियोजनाओं का प्रभाव:** बड़े विकास परियोजनाओं जैसे बांध निर्माण, खनन और अन्य उद्योगों के कारण आदिवासी समुदायों की पारंपरिक जमीन और संसाधन हड़प लिए जाते हैं। इससे उनकी जीवनशैली और आर्थिक सुरक्षा प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, नर्मदा नदी पर बने बांधों के कारण नर्मदा घाटी के आदिवासियों की परंपरागत जमीन और संसाधन समाप्त हो गए हैं।
3. **श्रमिक वर्ग में परिवर्तन:** आदिवासी समाज में कृषि और जंगल आधारित श्रमिक वर्ग का एक महत्वपूर्ण स्थान है। लेकिन शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण पारंपरिक रोजगार क्षेत्रों में कमी आई है, और आदिवासी समुदायों के लोग अब शहरी क्षेत्रों में श्रमिक के रूप में काम करने के लिए मजबूर हो रहे हैं। इससे उनकी सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक

जीवनशैली में भी बदलाव आया है।

4. वित्तीय अवसंरचना का अभाव: आदिवासी क्षेत्रों में बैंकिंग और अन्य वित्तीय सेवाओं की पहुँच सीमित है। इसके कारण, आदिवासी समुदायों के पास पर्याप्त संसाधन नहीं होते, जिससे वे अपनी कृषि और वाणिज्यिक गतिविधियों को बढ़ा नहीं पाते। इसके अलावा, सरकारी योजनाओं का लाभ सही तरीके से न मिलने के कारण आर्थिक स्थिति और भी बिगड़ जाती है।

5. शिक्षा और कौशल विकास की कमी: आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा और कौशल विकास के अवसरों की कमी है, जिससे वे आधुनिक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं होते। इसका परिणाम यह होता है कि आदिवासी समुदाय के लोग मजदूरी, अस्थिर रोजगार और गरीबी के शिकार हो जाते हैं।

निष्कर्ष: मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवनशैली पर शोध करते समय यह स्पष्ट होता है कि इन समुदायों की पारंपरिकता और सांस्कृतिक धरोहर जीवन के हर पहलू में बसी हुई है। यह समुदाय विभिन्न जैविक और सांस्कृतिक विविधताओं का संगम प्रस्तुत करते हैं, जहाँ उनका जीवन प्राकृतिक संसाधनों, भूमि, और वन्य जीवन से गहरे जुड़े हुए हैं। इनकी जीवनशैली में जीवन के सभी पहलुओंकृकृषि, शिकार, हस्तशिल्प, लोक संगीत, नृत्य, पर्व-त्योहार, और धार्मिक विश्वासों का मेल एक समग्र जीवन दर्शन को व्यक्त करता है।आदिवासी समुदायों का सामाजिक संगठन भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो सामूहिकता, सहकार्य, और पारस्परिक सम्मान पर आधारित होता है। इनका समुदाय केंद्रित जीवन-शैली उन सबकों से भरी हुई है जो आधुनिक समाजों के लिए भी प्रासंगिक हैं, जैसे कि समानता, सहयोग, और आपसी सहायता। आदिवासी समाज की संरचनाओं में पितृसत्तात्मकता की तुलना में मातृसत्तात्मकता की मजबूत उपस्थिति को भी देखा जा सकता है, जो इनकी संस्कृति को और अधिक अद्वितीय बनाता है।

समाज के विकास के साथ-साथ आदिवासी जीवनशैली में जो परिवर्तन हुए हैं, वे इसे वैश्विक प्रभावों और सरकारी योजनाओं से प्रभावित करते हैं। नदियों और जंगलों के संरक्षण के प्रयासों में इनकी सक्रिय भागीदारी और सांस्कृतिक क्रियाएँ, जैसे कि वन-उपज से संबंधित गतिविधियाँ, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। हालांकि, विकास की प्रक्रिया में अनियंत्रित खनन, औद्योगिकीकरण, और जंगलों के अतिक्रमण के कारण आदिवासी समुदायों के अस्तित्व और संस्कृति पर गंभीर खतरे उत्पन्न हो रहे हैं।इस संदर्भ में, यह अत्यंत आवश्यक है कि आदिवासी समुदायों के अधिकारों की रक्षा करते हुए, उनकी संस्कृति और जीवनशैली को संरक्षित करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं। सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों को इस समुदाय के विकास में सहायता देने के साथ-साथ, उनके पारंपरिक ज्ञान और जीवनशैली को सम्मानजनक तरीके से बढ़ावा देना चाहिए।

सारांश रूप में, मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों का सांस्कृतिक भूगोल और जीवनशैली न केवल एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमें जीवन और प्रकृति के बीच संबंधों की गहरी समझ भी प्रदान करता है। इनकी संस्कृति को सहेजने के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि यह धरोहर आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारत सरकार, जनगणना रिपोर्ट 2011
2. मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट।
3. 'आदिवासी जीवन और संस्कृति' - डॉ. रवींद्र वर्मा।
4. क्षेत्रीय सर्वेक्षण रिपोर्ट, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद।
5. विभिन्न शोध पत्र एवं फील्ड सर्वेक्षण डेटा।
6. शर्मा, के.एल. (2010). भारतीय समाजशास्त्र में आदिवासी अध्ययन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
7. वर्मा, आर.सी. (1990). भारतीय आदिवासी समाज, नई दिल्ली: राष्ट्रीय प्रकाशन।
8. चौधरी, बिनय कुमार (2004). आदिवासी संस्कृति और परिवर्तन. भोपाल: मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय प्रकाशन।
9. मध्य प्रदेश जनजातीय अनुसंधान एवं विकास संस्थान (2018). मध्य प्रदेश की जनजातियाँ एवं उनका जीवन. भोपाल: शासकीय प्रकाशन।
10. मेहता, एस.आर. (1991). Tribal Identity and Modernization . नई दिल्ली: इंटर इंडिया पब्लिशर्स।
11. Ministry of Tribal Affairs, Government of India (2020). Statistical Profile of Scheduled Tribes in India.
12 Mishra, S.N. (2003). Tribal Development: An Overview. नई दिल्ली: मित्तल पब्लिकेशन।
13. Census of India (2011). Madhya Pradesh – Population by Scheduled Tribes. भारत सरकार: भारत की जनगणना कार्यालय।
14. Patel, S. (2015). "Cultural Geography of Tribes in Central India." Indian Journal of Social Research, 56(4), 507-520*d*
15. ठाकुर, देवेंद्र (2000). भारत के आदिवासी: सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अध्ययन. नई दिल्ली: दीप एंड दीप पब्लिकेशन।

आदिवासी समुदायों की सामाजिक संरचना

आदिवासी समुदाय	परिवार की संरचना	समाज में भूमिका	विवाह परंपराएँ	प्रमुख रीति-रिवाज
भील	संयुक्त परिवार, परिवार में स्त्री-पुरुष समान अधिकार	पुरुष प्रधान, महिलाएँ घर की प्रमुख	परंपरागत विवाह रीति, सामूहिक विवाह	हवन, पूजा, आदिवासी गीत और नृत्य
गोंड	परिवार में बड़ी उम्र के पुरुषों का आदर	सामूहिक निर्णय, बुजुर्गों की सलाह का महत्व	कन्यादान परंपरा, समाज के नेताओं द्वारा विवाह	करमा उत्सव, परिवारिक समारंभ
बैगा	संयुक्त परिवार, परिवार में एकता की भावना	सख्त पारंपरिक मान्यताएँ, आत्मनिर्भर	सादे विवाह संस्कार, समाज की स्वीकृति जरूरी	हलमाई का आयोजन, पारंपरिक नृत्य
सहरिया	खाप (गुट) आधारित परिवार व्यवस्था	समाज में प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी	समाज द्वारा चयनित दूल्हा-दुल्हन	शादी के पश्चात सामूहिक भोज, जन समूह की भागीदारी
कोरकू	परिवारों का विभाजन, सामूहिक गुट	छोटे गाँवों में वर्चस्व, संतुलित समानता	विवाह के पूर्व वार्ता, लड़की के परिवार से स्वीकृति	रघुनाथ उत्सव, सामूहिक पूजा
भिलाला	बड़े परिवार, परंपराओं के प्रति गहरी निष्ठा	परंपरा और कड़ी अनुशासन में विश्वास	सामाजिक विवाह निर्णय, घर के बुजुर्गों की सलाह	पारंपरिक नृत्य, सामूहिक गीत

(स्रोत -व्यक्तिगत अध्ययन अनुसार)

आदिवासी समुदायों की पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ

आदिवासी समुदाय	कृषि पद्धतियाँ	मुख्य फसलें	कृषि पर निर्भरता
भील	झूम कृषि , ट्राइबल प्लॉट्स में कृषि	मक्का, सोयाबीन, बाजरा, तिल, धान	उच्च (आर्थिक जीवन का प्रमुख हिस्सा)
गोंड	चावल की खेती, जलाशय आधारित कृषि	धान, तिल, मूँग, कुटकी, मक्का	उच्च (प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर)
बैगा	छोटे पैमाने पर कृषि, जंगलों के पास कृषि	मक्का, गेहूं, चना	मध्य (मूल रूप से जंगल पर निर्भर)
सहरिया	सिंचाई आधारित कृषि, छोटे तालाबों में जल संचयन	मक्का, दालें, ज्वार	मध्यम (खाद्य सुरक्षा के लिए कृषि आवश्यक)
कोरकू	झूम कृषि, नदियों के पास खेती	मक्का, गेहूं, चावल	उच्च (प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग)
भिलाला	आदिवासी खेती, वन भूमि पर आधारित	मक्का, चना, तिल	उच्च (वन उपज एवं कृषि के मिश्रण पर निर्भर)

(स्रोत-मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट)

आदिवासी समुदायों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ

आदिवासी समुदाय	प्रमुख चिकित्सा पद्धतियाँ	उपयोग की जाने वाली जड़ी-बूटियाँ	चिकित्सा के क्षेत्र में ज्ञान का संरक्षण
भील	हर्बल चिकित्सा, वन्य उत्पादों का उपयोग	गिलोय, हल्दी, तुलसी, नीम	पारंपरिक चिकित्सक (हकीम) के माध्यम से ज्ञान का संरक्षण
गोंड	औषधीय पौधों का उपयोग, शारीरिक उपचार	आँवला, बबूल, सर्पगंधा, हल्दी	समुदाय में मौखिक रूप से ज्ञान का प्रसारण
बैगा	जड़ी-बूटियाँ और औषधियों का प्रयोग	धनिया, अजवाइन, आंवला, करेला	पारंपरिक वन चिकित्सकों के द्वारा उपचार
सहरिया	जड़ी-बूटियाँ और औषधियाँ, जल तत्वों का उपयोग	गिलोय, मेथी, हल्दी, मिर्च	हर्बल ज्ञान का संरक्षण परिवारों और समूहों के माध्यम से
कोरकू	जल और जड़ी-बूटियों का प्रयोग	नीम, गिलोय, बबूल, शहद	पारंपरिक चिकित्सकों द्वारा चिकित्सा का संचयन
भिलाला	वनस्पति आधारित उपचार, जल चिकित्सा	बबूल, कचनार, कड़ा, तुलसी	मौखिक रूप से चिकित्सा पद्धतियों का संरक्षण

(स्रोत-मध्य प्रदेश आदिवासी विकास विभाग की रिपोर्ट)

****